Dr. Vinod Baitha.
Marwari college Darbhanga.
Deptt of Economics

Unemployment in India. Different Types of unemployment
भारत में बेरोजगारी एवं बेरोजगारी के विभिन्न प्रकार

जब देश में कार्य करने वाली जनशक्ति अधिक होती है किन्तु काम करने के लिए राजी होते हुए भी बहुतों को प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता तो उस विशेष अवस्था को बेरोजगारी की संज्ञा दी जाती है। किसी भी देश के लिए बेरोजगारी एक अभिशाप है क्योंकि देश के आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक जीवन पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। आज भारत सहित विश्व के हर विकसित एवं अविकसित दोनों प्रकार के देशों में बेरोजगारी की समस्या है। लेकिन अविकसित देशों में इस समस्या ने काफी उग्र रूप धारण कर लिया है किसी भी देश का आर्थिक विकास बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश में बेरोजगारी की समस्या के समाधान कहाँ तक सफलता पायी है। यही कारण है कि भारत सहित विश्व के सभी देशों ने अपनी योजनाओं में बेरोजगारी को कम कर के पूर्ण रोजगार के लिए विशेष ध्यान दे रहे हैं।

बेरोजगारी की एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है। क्योंकि बेरोजगारी के विभिन्न रूपों के अनुसार इसकी परिभाषा बदल जाती है। बेरोजगारी की परिभाषा के रूप में हम कह सकते हैं कि " बेरोजगारी वह परिस्थिति है जिसमें श्रमिकों के काम करने की इच्छा एवं योग्यता रहने के बावजूद उन्हें काम नहीं मिलता है। अर्थव्यवस्था में यह परिस्थिति प्रायः तब उत्पन्न होती है जब श्रम की पूर्ति उसकी माँग की अपेक्षा अधिक हो जाती है। "तो बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। प्रो० पीगु के अनुसार " कोई भी व्यक्ति बेकार तब होता है जब वह काम पर लगा हुआ नहीं होता तथा उसे काम करने की इच्छा भी होती है।" A man is unemployed when he is both not employed and also desires to be employed " लेकिन वास्तव में तब यह नहीं होता है कि कोई व्यक्ति 12 घंटे काम करना चाहता है लेकिन केवल 8 घंटे ही काम करना पड़ता है। वह बेकार है।

इस प्रकार बेरोजगारी किसी भी देश के लिए अभिशाप है बेरोजगारी से विश्व के अनेक देश अनेक समस्याओं से ग्रसित हैं बेरोजगारी के अनेक रूप हैं जिससे भारत सहित विश्व के अनेक देश किसी न किसी रूप में प्रभावित हो रहे हैं। ऐच्छिक बेरोजगारी वह अवस्था है। जिसमें प्रचलित मजदूरी की दरों काम करना नहीं चाहते प्रो० पिगु के अनुसार " ऐच्छिक बेरोजगारी की अवस्था तब होती है जब सक्षम श्रमिक प्रचलित मजदूरी या उससे थोड़ा कम मजदूरी स्वीकार करना नहीं चाहते "। अधिक मजदूरी के लिए हड़ताल करने वाले श्रमिक ऐच्छिक बेरोजगारों के उदाहरण हैं। ये लोग ऐच्छिक बेरोजगार इस लिए कहे जाएंगे क्योंकि अपनी माँग में थोड़ी कम मजदूरी लेकर काम करने के लिए तैयार हो जाएंगे। लेकिन कुछ ऐसे भी श्रमिक होते हैं जो स्वेच्छा से काम करना नहीं चाहते हैं अतः उन्हें बेरोजगार की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, ऐसे लोग स्वेच्छा से काम नहीं करने वाले बेकार धनी idle Rich आदतन आलसी गरीब idle poor आते हैं तब लोग स्वेच्छा से काम नहीं करना चाहते तब उन्हें बेरोजगार नहीं कहा जा सकता है। लेकिन उन्हें ऐच्छिक बेरोजगार या बेरोजगार कहा जा सकता है। इसलिए बेकार धनी तथा आलसी गरीब ऐच्छिक बेरोजगार के उदाहरण हैं।

अनैच्छिक बेरोजगारी ऐच्छिक बेरोजगारी की विपरीत की स्थिति है अनैच्छिक बेरोजगारी कि स्थिति वह है जिसमें प्रचलित मजदूरी की दरों पर अथवा उससे कुछ कम दरों पर भी मजदूर काम करने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन उन्हें रोजगार नहीं मिलता इस तरह अनैच्छिक बेरोजगारी श्रमिकों के इच्छा के विरुद्ध उनपर लादी गयी बेरोजगारी है। प्रो० केन्स के अनुसार " अनैच्छिक बेरोजगारी वह अवस्था है जिसमें कोई व्यक्ति प्रचलित वास्तविक मजदूरी से कम वास्तविक मजदूरी पर भी काम करने के लिए तैयार रहता है। भले ही वह नगद मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हो या न हो। " इस प्रकार की बेरोजगारी समाज की सम्पूर्ण प्रभावोत्पादक माँग की कमी के कारण उत्पन्न होती है।

P.T.O

Scanned by CamScanner

अस्थिर बेरोजगारी अर्थव्यवस्था की गतिशीलता से श्रम बाजार की अपूर्णता के कारण उत्पन्न होती है। प्रो० डिलार्ड के शब्दों में "अस्थिर बेरोजगारी तब उत्पन्न होती है जब श्रम बाजार की अपूर्णताओं के कारण लोग बेकार हो जाते हैं।" Frictional unemployment exist when man are temporarily out of work because of imperfection in the labour market. अर्थव्यवस्था में कुछ उद्योगों की वस्तुओं की मांग कम होती है तो कुछ उद्योगों की वस्तुओं की मांग बढ़ती रहती है। इसके फलस्वरूप उद्योगों के उत्थान पतन होते रहते हैं। लेकिन एक उद्योग से दूसरे उद्योग में कई कारणों से श्रमिकों जाने में समय लग जाता है। इस अंतरिम समय में श्रमिक बेकार हो जाते हैं। इनकी अस्थिर बेरोजगारी की संज्ञा दी जाती है या अस्थिर बेरोजगारी कहते हैं। अस्थिर बेरोजगारी के कई कारण हो सकते हैं। जैसे श्रमिकों की अगतिशीलता, कुछ व्यवसायों का मौसमी होना, साधनों एवं कच्चे माल की कमी, श्रमिक एवं व्यापारों में गतिरोध, काम के अवसरों की जानकारी का अभाव इत्यादि, अर्थव्यवस्था में जितनी गतिशीलता होगी अस्थिर बेरोजगारी की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

मौसमी बेरोजगारी कुछ व्यवसायों में मौसमी स्वभाव के कारण उत्पन्न होती है। कुछ वस्तुएँ विशेष मौसम में ही उत्पन्न होती हैं उस वस्तु विशेष के उत्पादन में लगे हुए लोगों को अथवा वह वस्तु कच्चा माल है, तो उससे निर्मित वस्तुएँ तैयार करनेवाले लोगों को साल में कुछ महीनों के लिए रोजगार मिलता है, तथा साल के शेष भाग में वे बेकार रहते हैं इसको ही मौसमी बेरोजगारी कहते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय कृषि कार्य में लगे हुए मजदूरों तथा चीनी उत्पादन में लगे हुए मजदूरों के साथ यही परिस्थिति रहती है साल के कुछ महीनों में उन्हें रोजगार मिलता है शेष महीने बेकार रहते हैं, जिसे मौसमी बेरोजगारी कहते हैं।

औद्योगिक ढांचे संबंधी बेरोजगारी उद्योगों के ढांचे में परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न होती है जब किसी उद्योग की मांग में कमी होती है तो उद्योगों का ह्रास होता है। लेकिन दूसरी ओर अन्य उद्योगों में श्रमिकों की मांग होती है। क्योंकि उनकी प्रगति रुकती नहीं है। लेकिन ह्रास होने वाले उद्योगों के श्रमिक दूसरे उद्योगों में नहीं जाते इसका कारण यह है कि दूसरे उद्योगों में मिलने वाली मजदूरी कम हो सकती है। अथवा उस उद्योग में काम मिलने के लिए विशेष ट्रेनिंग की आवश्यकता हो सकती है, कभी-कभी श्रमिक दूसरे उद्योगों में नहीं जाते क्योंकि वे सोचते हैं कि ह्रासोन्मुख उद्योग की वस्तुओं की मांग शीघ्र बढ़ेगी और उन्हें काम मिल जाएगा। अतः इनको से उत्पन्न बेरोजगारी को औद्योगिक ढांचे संबंधी बेरोजगारी कहते हैं। औद्योगिक ढांचे संबंधी बेरोजगारी की अवस्था कुछ उद्योगों में श्रमिकों की अधिकता होती है तो कुछ उद्योगों में कमी होती है।

चक्रीय बेरोजगारी व्यवसाय-चक्र के कारण उत्पन्न होती है। यह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषता है कि उसमें व्यवसाय-चक्र आते रहते हैं। व्यवसाय चक्र की अवस्था में तेजी और मंदी आती रहती है। तेजी की अवस्था में बेरोजगारी कम रहती है और श्रमिकों को रोजगार अधिक मिलता है, लेकिन मंदी की अवस्था में बेरोजगारी बढ़ जाती है इस प्रकार से उत्पन्न बेरोजगारी को चक्रीय बेरोजगारी कहा जाता है।

छुपी हुई बेरोजगारी की अवस्था में श्रमिक अपने काम पर लगे रहते हैं। लेकिन उत्पादन में उनका योगदान अत्यन्त अथवा नहीं के बराबर होती है। प्रो० वी० के० आर० वी० राव के शब्दों में "छुपी हुई बेरोजगारी तब होती है जब श्रमिक अपने काम पर लगे रहते हैं। लेकिन उनका योगदान उत्पादन में शून्य के बराबर होता है। क्योंकि यदि वे काम बंद भी कर दें तो कुल उत्पादन में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वास्तव में काम पर लगे रहने पर ऐसे श्रमिकों को बेरोजगार ही कहना बेहतर होगा। ऊपर से देखने से लगता है। मानो श्रमिक काम पर लगे हैं। लेकिन उनके पीछे वास्तविकता यह है कि वे बेरोजगार ही हैं। क्योंकि उत्पादन के कार्य में उनका लगे रहना अथवा नहीं रहना दोनों बराबर है। इस प्रकार की बेरोजगारी को छुपी हुई बेरोजगारी कहते हैं। ऐसी व्यवस्था में मजदूरों की संख्या अधिक होती है।

सामान्य अथवा अस्थायी बेरोजगारी की स्थिति में श्रमिकों की स्वतंत्र गति

Scanned by CamScanner

श्रमिक प्रायः एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम ढूंढते आते-जाते रहते हैं, लेकिन दूसरे स्थान पर उन्हें शीघ्र ही रोजगार नहीं मिल पाता है। कभी-कभी उन्हें बेरोजगार ही रहना पड़ता है। जिसे सामान्य बेरोजगारी कहते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी हर समय तथा हर समाज में पायी जाती है। वास्तव में यह बेरोजगारी की न्यूनतम सीमा होती है। और एक सीमा के नीचे बेरोजगारी को नहीं लाया जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बेरोजगारी किसी भी देश में विकसित या अर्द्ध विकसित में हो, बेरोजगारी किसी भी रूप में क्यों न हो, समाज के लिए देश के लिए चिंता का विषय है। आज विश्व के देशों में बेरोजगारी की समस्या गम्भीर बनी हुई है बेरोजगारी से देश के नम शक्ति की बर्बादी होती रहती है एवं साधनों का दुरुपयोग होता रहता है प्रत्येक देश को बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर के पूर्ण रोजगारी की अवस्था करना चाहिए जिससे नम शक्ति के साथ संसाधनों का सही उपयोग होना चाहिए।

Scanned by CamScanner